पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द से संवेदना तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

हिन्दी हमारी पहचान हमारी शक्ति

'समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम'

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

समाज
विकास
शिक्षा
पर्यावरण
युवा
मूल्य
राजनीति
महिला
संस्कृति
समायान

समाज
साहित्य
संस्कृति
विकास
नई पीढ़ी
बेहतर कल

रचनाकार :-
सुमित कुमार

विचारों की स्याही से बदलता समाज...

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा
शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाधाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बैहतर कल...

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका **- सुमित कुमार**

इंसानी फितरत

सब अपना-अपना लाभ खोजते हैं...

माँ-बाप, बेटा-बेटी, यार-दोस्त—इस दुनिया के सारे नाते-रिश्ते कहीं न कहीं अपने-अपने स्वार्थ से जुड़े हुए हैं। यह बात सुनने में कड़वी जरूर लगती है, लेकिन शायद इंसानी फितरत की यही सबसे बड़ी सच्चाई है।

माँ-बाप अपने बच्चों को केवल इसलिए नहीं पालते कि वे उनसे प्रेम करते हैं, बल्कि उनके मन के किसी कोने में यह इच्छा भी होती है कि बुढ़ापे में यही संतान उनका सहारा बनेगी। वे चाहते हैं कि उनकी सन्तान उनका नाम रोशन करे, समाज में उनका मान बढ़ाए। इसमें संतान का हित अवश्य होता है, लेकिन कहीं न कहीं माता-पिता की अपनी इच्छाएँ और अपेक्षाएँ भी छिपी होती हैं।

वे लगभग बीस वर्षों तक एक ऐसे इंसान का निर्माण करते हैं, जो आगे चलकर उनकी बची हुई जिंदगी का सहारा बनेगा, उन्हें नई राहों से परिचित कराएगा और उस दुनिया को समझने में मदद करेगा, जो उनके लिए धीरे-धीरे बदलती जा रही है।

यार-दोस्तों के रिश्ते भी अक्सर जरूरतों से अछूते नहीं होते। जब तक कोई व्यक्ति हमारे सुख-दुःख में काम आता है, हमारी जरूरत पूरी करता है, हमारा अकेलापन बाँटता है या हमारे किसी काम आता है, तब तक वह हमें अपना और प्रिय लगता है।

लेकिन जिस दिन आवश्यकता समाप्त हो जाती है, कई बार रिश्ता भी धीरे-धीरे समाप्त होने लगता है।

हम इंसानों की फितरत ही कुछ ऐसी है—
जब तक कोई हमारे काम का है, तब तक वह हमारा अपना है;
जब तक उससे कोई मतलब है, तब तक वह हमारा प्रिय है।

शायद यही कारण है कि इस दुनिया में रिश्ते केवल प्रेम से नहीं, बल्कि प्रेम, आवश्यकता, अपेक्षा और स्वार्थ—इन सबके मिश्रण से बनते हैं।

लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि हर रिश्ता झूठा है या हर प्रेम स्वार्थी है। कुछ रिश्ते ऐसे भी होते हैं जहाँ स्वार्थ धीरे-धीरे पीछे छूट जाता है और इंसान केवल इंसान के लिए खड़ा रहता है।

शायद रिश्तों की असली परीक्षा भी वहीं होती है—

जहाँ कोई मतलब न हो, फिर भी साथ बना रहे;
जहाँ कोई लाभ न हो, फिर भी प्रेम बना रहे;
और जहाँ लेने के लिए कुछ न बचा हो, फिर भी कोई अपना देने के लिए तैयार रहे।

क्योंकि स्वार्थ से बने रिश्ते आवश्यकता के साथ समाप्त हो सकते हैं,
लेकिन निःस्वार्थ प्रेम से बने रिश्ते समय और परिस्थितियों से परे होते हैं।

- सुमित कुमार

लेखिका परिचय

नाम - - सुमित कुमार
निरमण्ड, कुल्लू, हिमाचल प्रदेश

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.........**सुमित कुमार**.........जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित “**एक लेख प्रतियोगिता**” में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना
समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...